जन मित्र सेवा संस्था चांदीखेत,

चौखुटिया, जिला-अल्मोड़ा

Contact Details
+91 123456789
abc@gmail.com

जन मित्र सेवा संस्था चांदीखेत, चौखुटिया, जिला–अल्मोड़ा, का परिचय

जन मित्र सेवा संस्था चांदीखेत, चौखुटिया, जिला-अल्मोड़ा, सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 के तहत 26/07/2003 को एवं आयकर अधिनियम 1961 की धारा 12ए के तहत 01/04/2007 को रजिस्टर्ड एवं आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी के अधीन 01/04/2007 को पंजीकृत संस्था है। संस्था का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण उत्तराखंड राज्य है। वर्तमान समय में संस्था द्वारा जनपद-अल्मोड़ा में चौखुटिया, हवालबाग, बासोली, ताकुल्ला तथा जिला-चमोली में गैरसैंण, नारायणबगड़, थराली, देवाल एवं जिला-बागेश्वर व पिथौरागढ़ में गरुड़, कपकोट, कांडा, पिण्डू, चकोड़ी, दसौली, बेरीनाग ग्रामीण क्षेत्रों में विगत 22 वर्षों से कार्य किया जा रहा है। संस्था अपने उद्देश्यों के अनुरूप ग्रामीण क्षेत्रों में नशे के प्रचलन के खिलाफ जागरूकता अभियान चला रही है तथा स्थानीय संसाधनों पर आधारित रोजगार संबंधी कार्यक्रमों को सहयोगिता के माध्यम से प्रोत्साहित कर रही है।

उत्तराखंड के हिमालयीय क्षेत्र के पर्यावरण (विशेषकर जंगलों, आग व पानी) पर जागरूकता अभियान चला रही है। संस्था समय-समय पर शिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता अभियान, बीपीएल परिवारों के छात्रों हेतु कंप्यूटर शिक्षा, स्वयं सहायता समूहों का गठन कर रोजगार से जोड़ना तथा सुदूरवर्ती क्षेत्रों में स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन कर लोगों को जागरूक करना, स्थानीय काश्तकारों पर आधारित प्रशिक्षण का आयोजन, महिला सशक्तिकरण एवं महिलाओं को उनके अधिकारों हेतु जागरूक करने हेतु गोष्ठियों एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने हेतु कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है।

अपने प्रयासों को मूर्त रूप करने एवं ग्रामीण क्षेत्र की आवश्यकताओं को ग्रामीणों के सहयोग से पूर्ण करने का प्रयास संस्था द्वारा किया जा रहा है विभिन्न सरकारी विभागों तकनीकी संस्थानों एवं गैर सरकारी संगठनों के साथ गोष्ठियों के माध्यम से संबंध स्थापित किए गए हैं जिस्म की संख्या के कार्य क्षेत्र में भी उपरोक्त विभागों की योजनाओं एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के अनुभवों का लाभ मिल सके।

संस्था द्वारा वर्तमान में जनपद-बागेष्वर के विकास खण्ड - गरुड़ में अपना कार्यालय स्थापित किया है। संस्था द्वारा क्षेत्र में नषामुक्ति को लेकर जागरूकता अभियान चलाया गया। संस्था द्वारा विभिन्न गांवों में नषे के दुश्प्रभावों से लोगों को बचाने हेतु संगोश्ठी आयोजन किया गया, जिसका विवरण निम्नवत् है।

1. वर्तमान में नषे के कारण परिवार पर हो रहे दुश्प्रभाव – संस्था द्वारा निम्न गांवों में नषे के कारण परिवार पर हो रहे दुश्प्रभाव पर कार्यक्रम आयोजित किये गये।

क्रसं०	दिनांक	स्थान	विकास खण्ड का नाम	उपस्थित कुल प्रतिभागी
1.	07/08/2023	पय्या	गरुड़	36
2.	19/08/2023	कुलाऊँ	गरुड	27
3.	25/08/2023	भिलकोट	गरुड	22
4.	03/09/2023	मवई	गरुड	20
5.	12/09/2023	कन्धार	गरुड	25
6.	17/09/2023	पिग्लों	गरुड	22
7.	22/09/2023	मैग्डीस्टेट	गरुड	26

2. वर्तमान में नषे के कारण आर्थिक स्थिति पर प्रभाव – संस्था द्वारा नषे के कारण परिवार के आर्थिक स्थिति पर पड़ रहे प्रभावों पर निम्न ग्रामसभाओं में कार्यक्रम आयोजित किये गये।

क्रसं०	दिनांक	स्थान	विकास खण्ड का नाम	उपस्थित कुल प्रतिभागी
1.	26/09/2023	गढखेत	गरुड़	32
2.	30/09/2023	उड़खुली	गरुड	36
3.	04/10/2023	गनीगॉव	गरुड	20
4.	07/10/2023	जखेड़ा	गरुड	25
5.	09/10/2023	सिमगढ़ी	गरुड	25

3. वर्तमान में नषे के कारण स्वास्थ्य पर प्रभाव - संस्था द्वारा नषे के कारण स्वास्थ्य पर पड़ रहे प्रभावों पर गोश्ठी की गयी।

4. संस्था द्वारा नषे के कारण सामाजिक दुश्प्रभाव पर गोश्टी की गई।

5. संस्था द्वारा वर्तमान में हो रहे नषे के कारण महिलाओं की जिन्दगी पर पड़ रहे असर पर कार्यषाला का आयोजन किया गया। जिसमें ग्रामीणों ने भी अपने-अपने बिचार रखे।

6. संस्था द्वारा नषे के कारण हो रहे घरेलु हिंसा पर गोश्ठी की गई, तथा कानूनी जानकारी भी दी गई। जिसमें गरुड बार एषोसिएसन के सदस्य व विधिक प्राधिकरण के सदस्य श्री गिरीष सिंह कोरंगा, व श्री सुन्दर सिंह बोरा जी द्वारा कानूनी जानकारी दी गई।

क्रसं०	दिनांक	स्थान	उपस्थित प्रतिभागी
1.	28/09/2023	संस्था कार्यालय	35

7. संस्था द्वारा नषे के कारण हो रहे घरेलु हिंसा, समाज पर पड़ रहे प्रभाव, स्वास्थ्य व आर्थिक स्थिति पर पड़ रहे प्रभावों की जानकारी व नषे के खिलाफ एकजुट होने के लिए निम्न ग्रामसभाओं में जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया।

क्रसं०	दिनांक	स्थान	विकास खण्ड का नाम	उपस्थित कुल प्रतिभागी
1.	11/10/2023	बण्ड	गरुड़	28
2.	21/10/2023	कोटुली	गरुड	26
3.	27/10/2023	जिनखोला	गरुड	30
4.	06/11/2023	गढसेर	गरुड	20
5.	11/11/2023	लौबाज	गरुड	26
6.	18/11/2023	नौघर	गरुड	22
7.	20/11/2023	लखनी	गरुड	35
8.	26/11/2023	कनस्यारी	गरुड	35
9.	06/12/2023	चनोली	गरुड	28
10.	15/12/2023	वज्यूला	गरुड	25
11.	28/12/2023	पिग्लों	गरुड	30

8. आग के रोकथाम हेतु वन पंचायतों के साथ गोश्ठीयों का आयोजन संस्था द्वार ग्राम पंचायतों में बने वन पंचायतों के सदस्यों के साथ मिलकर वनों के आग के रोकथाम हेतु कार्यक्रम चलाये गये। जिसमें वन पंचायतों, ग्राम पंचायतों की भागीदारी बढ़-चढ़ कर सुनिर्षचत हो अग्निषामक समूह गठित किये गये।

9. संस्था द्वारा माह जनवरी 2024 में क्षेत्र के विभिन्न सामाजिक कार्यकर्ताओं (श्री कमल बहादुर आले, श्री राजेन्द्र थायत, श्री दिनेष लाल, श्री पूरन सिंह रावत, श्री जगदीष बधानी, श्री हेम रावत, श्रीमती हेमा बोरा, श्री भीम सिंह, श्रीमती हीरा देवी, श्री रघुवीर सिंह, श्री कैलाष राम, श्री केवल राम, श्री पूरन सिंह, श्री पूरन चन्द्र, श्रीमती आनन्दी बोरा आदि विभिन्न क्षेत्रों के विषेशज्ञों से चर्चाये की गयी। गोश्ठियों में प्रतिभाग करवाया गया, और वनाग्नि के कारण ग्रामीण आर्थिक, ब्यावसायिक व सामाजिक नुकसान के प्रति आगाह किया गया।

ग्रामीण जंगली जानवरों से त्रस्त हैं जिससे उनके जीवन पर गंभीर प्रभाव पड़ रहे है। इन प्रतिकूल प्रभावों से बचने का एकमात्र उपाय जंगलों की वनाग्नि रोकना है।

10. संस्था द्वारा उत्तराखण्ड के जंगलों में लग रहे आग व उससे हो रहे नुकसान के बारे में विकास खण्ड गरुड़ के ग्रामसभाओं में बैठक की गई, जिसमें आग से हिमालयी पारस्थितिकीय पर पड रहे दुश्प्रभाव व ग्रामीण जनजीवन पर पड़ रहे प्रभावों पर गोश्ठी की गई जिसमें लोगों ने भी इस सम्बन्ध में विचार प्रकट किये। साथ ही गाँव बसाओ आग से जंगल बचाओ अभियान के तहत प्रतिज्ञा भी करवाई गयी।

क्रसं०	दिनांक	स्थान	विकास खण्ड का नाम	उपस्थित कुल प्रतिभागी
1.	14/02/2024	उड़खुली	गरुड़	28
2.	20/02/2024	वज्यूला	गरुड	32
3.	26/02/2024	कुलाऊँ	गरुड	18
4.	05/03/2024	बण्ड	गरुड	20
5.	14/03/2024	पय्या	गरुड	26
6.	21/03/2024	नौघरस्टेट	गरुड	22
7.	24/03/2024	लोहारचौरा	गरुड	21
8.	08/04/2024	गढखेत	गरुड	19
9.	13/04/2024	नरग्वाड़ी	गरुड	20
10.	18/04/2024	मैगडीस्टेट	गरुड	25
11.	25/04/2024	द्यौनाई	गरुड	23

“गॉव बसाओ, आग से जंगल बचाओ अभियान”

प्रतिज्ञा : हम प्रतिज्ञा करते हैं, कि हम अपने गांव, जंगल और हिमालय को बचाने की प्रतिज्ञा लेते हैं, न हम स्वयं वनों में आग लगायंगे, न दूसरों को लगाने दंगे।

जंगल बचेगा, गाँव व हिमालय बचेगा,
हिमालय बचेगा, सृष्टि बचेगी।

जन मित्र सेवा संस्था, ग्राम-चांदीखेत, पो०-गनई, चखुटिया,
जिला- अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड पिन-263656

11. आग से हो रहे नुकसान व भविश्य में होने वाले असर के बारे में सस्था द्वारा पम्पलेट छपवाकर समाचार पत्रों व अन्य माध्यम से लोगों तक पहुचाने का कार्य किया गया।

क्या हम देवभूमि के लोग हैं?

- पिछले एक दषक से हमारे जंगलों पर हमारी ही क्रूरता अब भारी पड़ने लगी है।
- क्या तपती दोपहरी में किसी जंगल में लगी आग से हमारी आत्मा में दर्द नहीं होता।
- क्या ये जंगल सिर्फ पेड़ पौधों घास के स्थान हैं।
- क्या कभी हमने सोचा देवों के देव महादेव का निवास हिमालय बिना जंगलों के बचा रह सकता है ?
- क्या हमने कभी सोचा बिना हिमालय के जीवन / विष्व की कल्पना करना संभव है ?
- क्या कभी हमने सोचा देष के षहर, देष की खेती, देष की हवा, देष को पानी, देष के उद्योग, देष की सेना, देष की सभ्यता बिना हिमालय के सम्भव है ?
- क्या कभी हमने सोचा बिना जंगलों के हिमालय बच सकता है ?
- क्या कभी हमने सोचा हमारी पहचान, हमारा अस्तित्व, हमारा जीवन इन जंगलों के बिना सम्भव है ?
- क्या कभी हमने सोचा जंगली जानवरों का मानव बस्तियों पर आक्रमण क्यों हो रहा है, (जंगलों की बनाग्नि के कारण)।
- क्या कभी हमने सोचा भीशण गर्मी की यह आग कितने जानवरों को भागने पर मजबूर कर देती हैं, अरबों की बन सम्पदा आग में स्वाहा हो जाती है ?
- क्या कभी हमने सोचा बार-बार किसी का घर जलाया जाये तो वह प्राणी वहां रहेगा ?
- क्या कभी हमने सोचा देवभूमि में रहकर हम देवपूजा कर रहे है! जिन जंगलों में ऋशियों / देवों का निवास हो उन्हें जलाकर क्या भगवान की पूजा सम्भव है ?
- क्या कभी हमने सोचा आने वाली पीढ़ी पानी / हवा के लिए कहां जायेगी ?

- क्या कभी हमने सोचा जंगल की जरूरत सरकार को नहीं हमको है, इसलिए सरकार से गुस्सा जंगल पर क्यों ?
- सोचिये ये जंगल पिछले एक दषक से भीशण गर्मी में लगातार जलाये जा रहे हैं। पिछले एक दषक से ही पहाड़ो में जंगली जानवरों का आतंक बड़ा है। पानी का हाहाकार मचा है। वर्शात में भूस्खलन बढ़े है। इन सबका सबसे बड़ा कारण जंगल की आग है ?
- क्या हम अपनी ही आने वाली पीढ़ी (जिसके लिए हम बढ़े-बढ़े सपने देखते हैं) को बर्बाद नहीं कर रहे है ?
- आइये आज ही संकल्प लें न जंगल में आग लगायंगे न आग लगने देंगे। अगर हम आज ही नहीं सुधरे तो आने वाला कल भयावह अंधकारमय होगा।

गाँव बसाओ, "आंग से जंगल बचाओ' अभियान।

जन मित्र सेवा संस्था, ग्राम-चांदीखेत, पो०-गनई, चखुटिया, जिला- अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड पिन-263656

12. संस्था द्वारा अपने समूहों के स्वरोजगार के लिए ग्रामसभा स्तर पर समय - समय पर छोटे - छोटे लघु उद्यमों हेतु हिमालयन ऑर्गेनिक औद्योगिक उत्पादन सहकारी समिति लि० पुरडा, गरुड़ जनपद-बागेष्वर के माध्यम से अचार बनाना, जूस बनाना, जैम बनाना आदि का प्रषिक्षण विकास खण्ड - गरुड के निम्न ग्रामसभाओं में दिया गया।

क्रसं०	दिनांक	स्थान	विकास खण्ड का नाम	उपस्थित कुल प्रतिभागी
1.	16/06/2024	सिमगड़ी	गरुड़	16
2.	20/06/2024	गढ़खेत	गरुड	12
3.	27/06/2024	गनीगॉव	गरुड	22
4.	03/07/2024	सुराग	गरुड	26
5.	07/07/2024	पय्या	गरुड	28
6.	10/07/2024	नौघरस्टेट	गरुड	18
7.	13/07/2024	कनस्यारी	गरुड	26
8.	17/07/2024	लोहारचौरा	गरुड	19
9.	20/07/2024	पथरिया	गरुड	25
10.	24/07/2024	मैगड़ीस्टेट	गरुड	20
11.	26/07/2024	तुंगेष्वर	चमोली	18
12.	28/07/2024	सवाड़	चमोली	22
13.	30/07/2024	थराली	चमोली	16
14.	02/08/2024	कुलसारी	चमोली	20

13. संस्था द्वारा समूहों के माध्यम से समूहों के आय बढ़ाने के लिए बुराष के फूल व निटिल (बिच्छू घास) आदि को सहकारिता के माध्यम से बाजार उपलब्ध कराने में मदत की गयी। जिससे समूहों की आय में वृद्धि होती है।

14. संस्था द्वारा क्षेत्रीय किसानों के आय को बढ़ाने व कृर्शि उपज में बढोतरी के लिए समय-समय पर जैविक बीज जैसे लहसुन, अदरक, मडुवा, लाल धान आदि का वितरण सहकारिता के माध्यम करवाया जाता है।

15. संस्था द्वारा दूरस्थ ग्रामसभाओं में होने वाले फल व अनाज जैसे- नींबू, माल्टा, आंवला, आम, मडुवा, भट्ट, झुंगरा , लाल धान आदि को सहकारिता के माध्यम से उचित मूल्य पर बाजार उपलब्ध कराने में किसानों की मदत की जाती है। जिससे विगत वर्षों में किसानों की फसल व फल दोनों को उचित बाजार व उचित दाम मिला है।

16. वर्तमान में नषे के कारण स्वास्थ्य पर प्रभाव - संस्था द्वारा नषे के कारण स्वास्थ्य पर पड़ रहे प्रभावों पर गोश्ठी की गयी।

17. संस्था द्वारा वर्तमान में हो रहे नषे के कारण महिलाओं की जिन्दगी पर पड़ रहे असर पर कार्यषाला का आयोजन किया गया। जिसमें ग्रामीणों ने भी अपने अपने बिचार रखे।

क्रसं०	दिनांक	स्थान	विकास खण्ड का नाम	उपस्थित कुल प्रतिभागी
1.	12/08/2024	मनकोट	बागेष्वर	16
2.	17/08/2024	हरसिल	बागेष्वर	12
3.	21/08/2024	कन्यालीकोट	कपकोट	20
4.	27/08/2024	असौं	कपकोट	15
5.	06/09/2024	एठाड़	कपकोट	22
6.	16/09/2024	कर्मी	कपकोट	15
7.	24/09/2024	सामा	कपकोट	18
8.	30/09/2024	हड़वाड	बागेष्वर	20
9.	08/10/2024	पन्द्रपाली	बागेष्वर	18
10.	14/10/2024	काडा	बागेष्वर	15
11.	20/10/2024	बिजयपुर	बागेष्वर	18
12.	28/10/2024	उखल्सौ	बागेष्वर	20

13.	07/11/2024	खाईखाल	बागेष्वर	16
14.	12/11/2024	फटगली	बागेष्वर	14
15.	19/11/2024	बमराडी	बागेष्वर	21

18. संस्था द्वारा वर्तमान में आज के युवा में नषा का प्रभाव व नषे से युवा वर्ग में हो रहे दुश्प्रभावों को लेकर विभिन्न सामाजिक कार्यकर्ताओं और विषेशज्ञों के माध्यम से राजकीय इन्टर कालेज - वज्यूला, चौखुटिया, द्वाराहाट, महाविद्यालय-गरूड़, कपकोट, कांडा, द्वाराहाट सहित विभन्न विद्यालयों व गांवों में गोश्ठीयां संचालित की गयी, जिसमें युवाओं को नषे से नुकसान व भविश्य में इसके दुश्प्रभावों पर गहन विचार कर आह्वान किया गया कि युवा वर्ग नषे के खिलाफ खुद तो जागरूक रहे ही, अपने आस-पास के समाज को भी जागरूक करे। तांकि एक नषा मुक्त समाज व भविश्य का निर्माण हो सके।

19. वर्तमान में नषे के कारण आर्थिक स्थिति पर प्रभाव संस्था द्वारा विगत वर्शो में नषे के कारण परिवार के आर्थिक स्थिति पर पड़ रहे प्रभावों पर निम्न ग्रामसभाओं में कार्यक्रम आयोजित किये गये।

क्रसं०	दिनांक	स्थान	विकास खण्ड का नाम	उपस्थित कुल प्रतिभागी
1.	08/12/2024	पाली	चौखुटिया	21
2.	14/12/2024	बमनगाँव	चौखुटिया	15
3.	19/12/2024	खनुली	चौखुटिया	18
4.	23/12/2024	छिताड़	चौखुटिया	22
5.	05/01/2025	महतगाँव	चौखुटिया	25
6.	10/01/2025	अमस्यारी	चौखुटिया	12
7.	16/01/2025	भटकोट	चौखुटिया	14

8.	24/01/2025	बसरखेत	चौखुटिया	16
9.	02/02/2025	बगड़ी	चौखुटिया	21
10.	06/02/2025	टटलगांव	चौखुटिया	16
11.	13/02/2025	महलचौरा	चौखुटिया	22
12.	18/02/2025	बग्वालीपोखर	द्वाराहाट	14
13.	26/02/2025	गगास	द्वाराहाट	18
14.	05/03/2025	वैरती	द्वाराहाट	16
15.	12/03/2025	हॉट	द्वाराहाट	14
16.	18/03/2025	दूनागिरी	द्वाराहाट	15
17.	24/03/2025	सराईखेत	द्वाराहाट	21
18.	26/03/2025	कफड़ा	द्वाराहाट	16

माह दिसम्बर 2024 में बिगत 4 माह में आयोजित कार्यक्रमों संगोष्ठियों का तुलनात्मक अध्ययन / विष्लेशण / समीक्षा की गई।
जागरूकता अभियान से लोगों पर क्या / कितना समारात्मक प्रभाव पड़ा।
हमने पाया कि जिन गांवों में अभियान चलाया गया, और नषे के अलग-अलग प्रभावों पर विचार गोश्ठियां की थी।
उन गांवों के ग्रामीण महिलाओं में उत्साहजनक परिणाम देखने को मिले।
हमारी टीम के सदस्यों ने मनोवैज्ञानिक तरीके भी अपनाये थे, जैसे महिलाओं द्वारा अपने घरों में नषे के दुष्प्रभावों से सम्बन्धिन किताबों और सोषल मीडियां में उपलब्ध छोटे-छोटे कार्यक्रमों को अपने परिवार / बच्चों / पति के साथ साझा करना, खासकर बच्चों के माध्यम से घर के उस सदस्य को समझाने की कोषिश करना, उसके हिंसात्मक ब्यवहार से हो रहे दुश्प्रभावों पर उसका ध्यान आकर्शित करना। कुछ गांवों में हमने पाया कि महिलाओं ने अपने महिला संगठन (जैसे समूह/मंगलदल) को पुनर्गठित किया और ग्रामीण क्षेत्र में नषे की अवैध विक्री के खिलाफ जमकर मोर्चा लिया। कुछ स्थानों पर कानूनी सहायता भी ली गई।

इस मुहिम का परिणाम भी सकारात्मक रहा है। नषे (जैसे षराब आदि) को अवैध विक्री पर अंकुष लगा और नषा करने वालों पर भी कुछ हद तक रोक लग सकी।

एक-दो उदाहरण षराब छोड़ने के भी मिले लेकिन इस पर आगे भी नजर रखने की आवष्यकता है कि नषा छोड़ने वाला कब तक या स्थायी तौर पर छोड़ पाता है या नहीं।

संस्था द्वारा चलाया गया अभियान अपने सार्थक उद्देष्य की तरफ बढ़ रहा है, तथा इस अभियान के अर्न्तगत आगे नषामुक्ति के अन्य उपायों पर भी कार्य किया जाना सुनिष्चित हुआ है। जिसके अन्तर्गत लोक सांस्कृतिक कार्यक्रम नषा मुक्ति केन्द्र, विधिक जानकारियों हेतु विभिन्न विशयों पर विषेशज्ञों के माध्यम से जागरूकता अभियान, महिलाओं के अलग-अलग समूहों के माध्यम से बृहद जागरूकता कार्यक्रम / संगोश्ठियां आयोजित की जायेंगी। कार्यक्रम को प्रथम चरण में कुमाऊँ के चार जिलों में, द्वितीय चरण में पूरे कुमाऊँ क्षेत्र में व तृतीय चरण में गढ़वाल के पाँच जिलों में तथा चतुर्थ चरण में सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में इस अभियान को सभी महिला समूहों और अन्य विषेशज्ञ / लोगों की भागीदारी से आगे बढ़ाया जायेगा। इसके सार्थक परिणामों हेतु तिमाही / छः माही समीक्षा प्रक्रिया को निरन्तर जारी रख कार्य किया जायेगा।

नषे के खिलाफ अभियानों ने भी बेहद सार्थक परिणाम दिये है। कई गांवों में कई उदाहरण सामने आये है। कि कुछ लोग नषे के चंगुल से पूर्णतया बाहर आये है। जिन्हें प्रेरणा के तौर पर सम्मानित किया जा रहा है।

जिससे अन्यत्र लोगों में जागृति आये।

संस्था यह महसूस करती है कि ये कार्यक्रम षतत् जारी रखने जरूरी आवष्यक हैं, और लोगों को आजीविका सम्बन्धी कार्यों पर भी जोड़ना आवष्यक है।

संस्था द्वारा वित्तीय वर्श 2024-25 में वनाग्नि रोकने, समूहों के स्वरोजगार हेतु प्रषिक्षण कार्यक्रम, नषे के प्रभावों हेतु गोश्ठी व नषे के कारण आर्थिक स्थिति पर प्रभावों पर जिला बागेष्वर, जिला अल्मोड़ा व जिला चमोली के ग्रामसभाओं में किये गये कार्यक्रमों में ब्यय का विवरण निम्न प्रकार है -

क्रसं०	कार्यक्रम विवरण	जिले का नाम	कुल ग्रामसभाओं की संख्या	ब्यय धनराषि
1.	उत्तराखण्ड में वनाग्नि से हो रहे नुकसान व वनाग्नि रोकने पर चर्चा व बैठक	बगेष्वर	04	5586
2.	समूहों के स्वरोजगार के लिए प्रषिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन	बागेश्वर व चमोली	14	19488
3.	नशे के कारण महिलाओं के जीवन पर पड रहे असर पर कार्यषाला का आयोजन	बगेष्वर	15	20880
4.	नषे के कारण आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पर कार्यक्रमों का आयोजन	अल्मोडा	18	25057
	कुल ब्यय धनराषि			**71011**

उत्तराखण्ड के जंगलों में आग न लगने देने का विकल्प गांव बसाओं, आग से जंगल बचाओ अभियान ।

हिमालय को उत्तराखण्ड के गांव और जंगल से अलग देखना सबसे खराब स्थिति है। गांव/ हिमायलय / जंगल ये एक दूसरे के पूरक हैं। बिना गांव, जंगल और हिमालय की कल्पना भी असंभव है, उसी तरह बिना जंगल, गाव और हिमालय की कल्पना नहीं हो सकती है। हिमालय विष्व पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण घटक है। भारत के लगभग आधी आबादी का मतलब करोड़ो लोगों की दैनिक जीवन की सम्पूर्ण गतिविधियों में हिमालय की भागीदारी है। गंगा का पानी जहां तक पहुंचता है वह क्षेत्र हिमालयी प्रभाव से अछूता नहीं है। और यही हिमायल अपने अभिन्न अंग उत्तराखण्ड के गांव और जंगल पर निर्भर है। जब उत्तराखण्ड के जंगल नौ माह आग की लपटों से घिरे हैं तब इसके दुश्प्रभाव कितने व्यापक हैं, इस पर गहन चिंतन की आवष्यकता है। तब समस्त योजनायें इसी दृश्टिगत होनी अति आवष्यक है।

उत्तराखण्ड के जंगलों की आग का अभिप्राय कि भारत की आधी आबादी के पानी और हवा की बात कर रहे है। हम विष्व में खाद्यान्न उत्पादन की बात कर रहे हैं। हम बात कर रहे हैं बुद्ध पानी पर बढ़ते दबाव की। हम बात कर रहे हैं प्राकृतिक संपदा के विनाष से मानव जीवन के संकट की उत्तराखण्ड के जंगलों में आंग के भयावह दुश्परिणाम कुछ तो सामने है।

कुछ आने वाले कल में हमारे सामने होंगे। भविश्य में विज्ञान की तरक्की आर्थिक तरक्की कितनी भी हो जाये लेकिन सामान्य जीवन जीने के लिए इस प्राकृतिक स्वरूप को बचाये बगैर किसी भी तरक्की में जीवन की परिकल्पना तो नहीं हो सकती है। उत्तराखण्ड के जंगलों की आग भस्मासुर की तरह हमारे चारों तरफ विनाष को खड़ा कर रही है।

उत्तराखण्ड के जंगलों में आग मानव जनित है। जिसके विभिन्न कारण है। उत्तराखण्ड के गाव जंगलों के बीच में स्थित है गांव की 100 प्रतिषत् भागीदारी जंगलों के साथ रही है। लेकिन कई आर्थिक/सामाजिक कारणों से जंगल और जनभागीदारी का मजबूत गठबंधन गंभीर रप से कमजोर पड़ा है। साथ ही एक ऐसी सोच को बढ़ावा दिया गया है। कि आग बुझाने के कई कार्यक्रम पोशित हुए है। जंगल का भूमि क्षेत्र कभी भी आसान पहुंच का नहीं होता हैं। तब आग लगने के बाद बुझाने की प्रक्रिया असफल ही होगी। जिस क्षेत्र में भी जंगली आग लगती हैं वहीं क्षेत्र पूरी तरह आग की भेंट चढ़ जाने के बाद आग बुझती है, या बुझायी जा सकती है। हम आग लगने और बुझाने की सोच और कार्यक्रम आगे नहीं बढ़ पा रहे है। जबकि परिस्थिति हमें अलग और समग्र तरीके से सोचने व प्रक्रिया में आगे बढ़ने की तरफ ले जा रही है।

इसलिए हम गांव को साधन सम्पन्न बनाकर जंगल की आग पर नियंत्रण पाने का अभियान चला रहे है। तांकि हिमालय का मूलस्वरूप सुरक्षित रहे। 80 प्रतिषत् भू-भाग पर जंगलों का उत्तराखण्ड स्वर्ग है। परन्तु वनाग्नि से यह संम्पूर्ण

प्राणी विज्ञान के लिए नर्क बनता जा रहा है। इसे रोजना होगा। जंगल की आग को षून्य लक्ष्य तक ले जाना होगा। यह कार्य आज/अभी से प्रारम्भ करना होगा, तभी अने वाली पिढ़िया और भविश्य सुरक्षित है।

स्थानीय स्तर पर ब्यवसायिक गतिविधियों को जंगली आग से भारी नुकसान हो रहा हैं पर्यटन आधारित अर्थव्यवस्था बहुत गंभीर संकट में हैं पहाड़ों में घुमने का समय अक्टूबर माह से जून मध्य तक का बेहतरीन समय है। परन्तु उत्तराखण्ड में यही समय भयावह वनाग्नि का हो गया हैं। जिसवे पर्यटन गतिविधयां गंभीर प्रभावित है। जंगलों से गुजरती सड़कें असुरक्षित व तनावपूर्ण थकावट के जिए बेहद कठिन होती है।

जंगली आग के कारण जंगली जानवरों की समस्या / पानी की समस्या / साफ हवा की समस्या स्थानीय लोगों के मानसिक तनाव का बड़ा कारण है। और यही समस्या से आने वाला पर्यटक भी प्रभावित हो रहा है। फलस्वरूप आमदनी पर गंभीर संकट और पलायन की प्रवृति को अत्यधिक बढ़ा रही है। जिससे गांव/जंगल / हिमालय बुरी तरह से प्रभावित हुए है।

समाधान :-

हम समाधान को ब्यापक दायरे में ले जाकर ही इस दावालन को नियन्त्रित कर सकते हैं हमें इसके पून्य को लक्ष्य बनाकर योजना पर कार्य करना होगा। इसमें प्रथम हमें गांव को केन्द्रित कर योजनाबद्ध आगे बढ़ने की प्रक्रिया अपनानी होगी। गांव को कृशि संसाधन से सम्पन्न करना एक बढ़ा कदम है एक ऐसी सड़क का निर्माण जो हमें गांव तक ले जाये और गांव में रहने की रूचि प्रदान करे। हमारे गांव हिमालयी प्रर्यावरण को सुरक्षित करने के लिए सम्पन्न होना अति आवष्क है। जंगली जानवरों व पानी के आभाव के कारण गांव में खेती अरूचिकर बन गयी है। आज भी गांव में प्रत्येक परिवार के कुछ सदस्य तो रहते ही हैं परन्तु गांव की जमीनें बंजरीकरण की विषालता की तरफ बढ़ रही हैं हम इन जमीनों को आबाद करने की योजना पर कार्य करेंगे। हम उत्तराखण्ड के जंगलों में आन न लगने देने की प्रक्रिया पर कार्य करने हेतु आगे बढ़ रहे है।

कृर्शि/ उधानीकरण सबसे बड़ा कदम हैं गांव के साधनसम्पन्न होने से गांव की रूची जंगलों में पुर्नविकसित होगी, क्योंकि कृशि गतिविधियों के पोशण हेतु जंगल का सुरक्षित होना सबसे पहले जरुरी है। जिसके लिए जागरूकता अभियान, समूह पद्धति को सुदृढ़ करना, घटती हवा और घटता पानी के दुश्प्रभावों को गंभीरता से लोगों तक पहुंचाना, आग न लगने देने हेतु संकल्प लेना, गांव के उत्पादों हेतु बाजार विकसित करना कदाचित आग की घटना से निपटने के संषाधनों को ग्रामीण संरक्षण में रखना, एक सतत् परियोजना जिसे जीवन जीने का रास्ता बने।वनों में लगने वाली आग से सबसे पहले वन्य जीव प्रभावित होते हैं। जंगल की भयावह आग जंगली जानवरों को वहां से भागने पर मजबूर करती है, और बार-बार लगती आग उन्हें वहा वापस नहीं लौटने देती।

जंगली जानवर गांवों में गांव की खेती पर सबसे बड़ा खतरा है। जानवर को भोजन की तलाष गांव में जम जाने को मजबूर करती है। जंगल की आग से जंगल में पानी के मूल स्रोत बुरी तरह तहस-नहस हो गये है। पानी को रिचार्ज और संग्रहित करने वाली वनस्पति पूर्णतया विनाष के कगार पर है। वनाग्नि की भयावता का आकलन एक यह भी है कि एक मनुश्य जंगल का जब सामान्य उपभोग करता है। जितना उपभोग वह लगभग 25 साल में कर पाता है, एक बार में आग लगने से उतनी संपदा नश्ट हो रही है। हवा का प्रदूशण जंगली आग के धुंए से गांव स्तर पर भी प्रभावित कर रहा है।

जब हम उत्तराखण्ड में जंगलों की आग की बात करते हैं, तो हम केवल आग लगने बुझाने या सामान्य आग की घटना की बात नहीं करते हैं।

कार्य क्षेत्र और कार्य :

- उत्तराखण्ड के जंगलों में आग न लगने देने के विकल्प।
- गांव बसाओ, आग से जंगल बचाओ अभियान।
- जलता जंगल, मरता पहाड़।
- गांव, जंगल और हिमालय एक दूसरे के पूरक।
- गांव और हिमालय की कल्पना का मार्ग/सेतु हैं- जंगल।
- वर्शा ऋतु को छोड़कर धधकते जंगल औसतन नौ माह जंगलों में आग हैं।

आग के प्रभाव :

- आग से पारिस्थिकी संतुलन तहस-नहस हो रहा है।
- आग से हिमालयी परिस्थिति लगातार बदल रही है।
- आग से प्राणी विज्ञान का तंत्र ध्वस्त हो रहा है।
- आग से वनस्पति विज्ञान तंत्र तहस-नहस हो रहा है।
- आग से भौगोलिक संतुलन तहस-नहस हो रहा है।
- आग से ग्रामीण पारंपरिक कृशि (बारहनाजा पद्धति) तहस-नहस हो गयी है।
- आग से उत्तराखण्ड के हिमालयी क्षेत्र की नव संरचना ध्वस्त हो रही है।
- आग से उत्तराखण्ड के गांव, जंगल और गंगा क्षेत्र की आबादी पर पानी के घटते स्तर/स्रोत पर कुप्रभाव स्पश्ट होने लगे है।
- आग से व्यवसायिक गतिविधियों पर्यटन व अन्य पर प्रतिकूल प्रभाव स्पश्ट होने लेगे है।
- ग्रामीण रोजगार ध्वस्त हो रहे है।
- आग से मानसिक व षारीरिक स्वास्थ्य की समस्यायें भयावह हो रही है।

निराकरण :

- ग्रामीण तंत्र को सुदृढ़ बनाना होगा।
- जन भागीदारी को जंगलों के प्रति सुनिष्चित करना होगा।
- ग्रामीण योजनायें स्थायी रोजगार के साधन के रूप में विकसित करनी होगी।
- स्थानीय उत्पादों के लिए स्थायी बाजार उपलब्ध कराना होगा।

- जागरूकता / भागीदारी अभियान को स्थायी रूप से चलाना होगा।
- ग्रामीण कृशि में रूची हेतु विभिन्न संषाधनों को उपलब्ध कराना होगा।
- जंगल की आग को पून्य लक्ष्य तक पहुंचाना होगा।
- अभी तक हुए नुकसान की पूर्ति के लिए आगे कई वर्शों तक वनाग्नि को समपूर्ण तरीके से रोकना ही एकमात्र विकल्प है।

हिमालय और भारत की आधी आबादी के संरक्षण के लिए उत्तरी भारत के वायुमण्डल/ धरातल को पुद्ध करने वाला क्षेत्र जब खुद के वजूद और स्वयं 9 माह आग के धुंए से घिरा है तो 60 करोड़ आबादी के लिए कितना गहरा संकट है। हवा और पानी का मूल स्रोत हिमालय श्रृखला है। (गांव, जंगल और हिमालय) जंगल की आग को प्रमुखता से गंभीर समस्या न मानना उत्तराखण्ड के वजूद का संकट तो है ही यह विष्व के संतुलन के लिए भी खतरा है।

समस्या :- गांव पर प्रभाव-

- कृशि भूमि का बंजरीकरण,
- उद्यानीकरण का विनाष,
- मानव स्वास्थ्य पर दुश्प्रभाव,
- अभावग्रस्त जीवन,
- गांव पलायन की प्रवृति में आगे निकल रहा है,
- वन्य जीव क्षरण बहुत तेजी से।
- पारिस्थिकी सन्तुलन में सहायक जीव व बनस्पति विनाष के अन्तिम बिन्दु पर।
- राज्य की मूलसप्पदा वन का मूल स्वरूप तहस-नहस ।
- राज्य की उत्पादन क्षमता का तेजी से हास।
- राज्य में पलायन एक खौफनाक स्तर पर।
- राज्य के पहाडी क्षेत्र में भूमि का बंजरीकरण तेजी से।
- पानी के मूल स्रोतों और हिमालय का मूल स्वरूप तहस-नहस हो रहा है।

बिचार/स्लोगन :

उत्तराखण्ड के जंगलों में आग लगने व बुझाने की प्रक्रिया से अलग जंगलों में आग न लगने देना सबसे बड़ा समाधान है।

बिचार/स्लोगन :

उत्तराखण्ड के जंगलों की आग के कारण-

उत्तराखण्ड के गांव में जंगली जानवरों का प्रकोप।
उत्तराखण्ड के गांव में पानी की समस्या का गंभीर होना।
उत्तराखण्ड के गांव में आय के संसाधन समाप्त होना।
उत्तराखण्ड के गांव में पारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव।

संस्था द्वारा उत्तराखण्ड के हिमालयी क्षेत्र में पर्यावरणीय स्थिति और जंगलों को बचाव हेतु गांव बसाओ, आग से जंगल बचाओ अभियान को चलाया गया है।

जिसके अन्तगत अल्मोडा व बागेष्वर जिले के विभिन्न गांवों में जागरूकता अभियान / गोश्ठियां चलाई गई है।

इस कार्यक्रम में हमारी संस्था ने ग्रामीणों को प्रतिज्ञा करवाई।

चूकिं उत्तराखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों का मानव जीवन पूर्ण रूप से जंगलों पर निर्भर करता है। ग्रामीण मानव गतिविधियों में जंगल की भूमिका मानव परीर में सास और रक्त के प्रवाह की तरह है। ग्रामीण कृशि/पषु पालन/य कई आजीविका परक कार्य की पूर्ति के लिए जंगल ही एकमात्र साधन है।

संस्था द्वारा चलाये गये इस अभियान से ग्रामीण अंचल में बेहद सकारात्मक और उत्साह जनक नतीजे आये है। संस्था की टीम ने समीक्षात्मक प्रक्रिया के दौरान पाया कि लोगों ने जंगल के प्रति अपने उदासीन रूख का आत्मचिंतन बेहद गंभीर से किया है। जंगल का हमारे जीवन में कितना महत्वपूर्ण योगदान है। यह आधुनिक पर्यावरणीय स्थिति से भी लोगों ने जाना।

इससे ग्रामीणों ने जंगलों को बचाने की प्रतिज्ञा का षत्प्रतिषत् पालन किया। ग्रामीण क्षेत्रों पारंम्परिक तौर पर भी जंगल में आग लगाने को बेहद बुरा माना जाता है।

बिगत कुछ वर्षों से अचानक लोगों ने खुद आगजनी तो नहीं की लेकिन विभिन्न कारणों से लग रही आग के प्रति अपने नजरिये को संकुचित कर लिया, जिस कारण यह एक निरन्तर चलने वाली विकराल स्थिति बन गई।

हमारी संस्था के इस गांव बसाओ, आग से जंगल बचाओ अभियान में सबसे बड़ी सफलता यह मिली कि स्थानीय ग्रामीणों ने जंगल को पुनः अपना जीवन आधार मानने का संकल्प किया, और अपने-अपने गांव की सरहदों में जंगली आग की रोकथाम का संकल्प/प्रतिज्ञा ली।

ग्रामीण जागरूकता का यह परिणाम मिला कि जंगली आग पर हम लगभग 35 प्रतिषत् तक काबू पाने में सक्षम हुए है।

संस्था का अध्ययन से स्पश्ट मानना है कि उत्तराखण्ड में हिमालय गांव और जंगल को समान महत्वपूर्ण दृश्टि से देखना होगा, और ग्रामीण आजीविका को पुनः जंगल के लिए महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखना होगा।

संस्था चाहती है कि गांव बसाओ, आग से जंगल अचाओ अभियान को बेहतर रूप से चलाया जायेगा।

जिसमें प्रतिमाह 10 दिन एक गांव में 4-5 लोगों की टीम 20-25 गांव प्रतिमाह आच्छादित किये जायंगे।

वर्श 2025 तो उत्तराखण्ड के हिमालयी क्षेत्र के लिए बेहतरीन साल रहा है। कुछ मौसम की बानगी रही। और हमारे यूट्यूब चैनल और अन्य डिजिटल माध्यमों के जागरूकता अभियान ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।